मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन

(पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग म.प्र.)

(6)

समूह को मिला राष्ट्रीय सम्मान

(मजदूरी छोड आत्मनिर्भर बने लक्ष्मी स्व–सहायता समूह के सदस्य)

सामान्य परिचय :–

यह सच्ची कहानी एक ऐसी गरीब अनुसूचित वर्ग की 42 वर्षीय महिला रूखमा बाई की है जो कि ग्राम थडौदा विकासखण्ड आगर जिला आगर मालवा मे निवास करती हैं। रूखमा बाई के अनुसार उनके परिवार मे उनके पति एवं 01 पुत्र एवं 01 पुत्री हैं। वह ग्राम में आजीविका मिशन द्वारा संचालित लक्ष्मी स्व–सहायता समूह की सदस्य हैं। इस समूह में कुल 12 सदस्य हैं, रूखमा बताती हैं कि समूह में जुडने से पहले समूह के सभी सदस्यों के परिवारों की आर्थिक स्थिती ठीक नहीं थी। काम की तलाश में परिवार के सदस्य गॉव छोडकर बाहर जाते थे। इससे उनके परिवार की देखभाल भी अच्छी तरह से नहीं कर पाते थे। किंतु जब से हम सभी लक्ष्मी स्व–सहायता समूह से जुडे फिर तो मानो किसी भी सदस्य ने पीछे मुड कर नहीं देखा। आज सभी सदस्य स्वयं के आय अर्जन की गतिविधी में संलग्न हैं। अब उन्हें काम की तलाश में ग्राम से बाहर भी नहीं जाना पडता है इसका यह फायदा भी हुआ कि वे अपने परिवार के बडे बुजुर्गों एवं बच्चों की भी देखभाल अच्छे से कर पा रहीं हैं। समूह के सदस्यों के द्वारा चलाई जा रही आर्थिक गतिविधि से प्राप्त आय से परिवार व बच्चों की पढाई का खर्चा भी निकलने लगा। इससे समाज में उनकी मान–प्रतिष्ठा भी बढी है।

समूह की आर्थिक मदद से आत्मनिर्भर बने :–

रूखमा बाई बताती हैं कि वर्तमान मे उनके समूह के पास कुल बचत 54000/– रूपये हो गई है एवं समूह ग्राम संगठन से अपनी साख के आधार पर 593000/– रूपये ऋण ले चुका है। इतना ही नहीं अच्छी साख एवं पारदर्शी लैन–दैन के आधार पर समूह बैंक से 170000/– रूपये का भी ऋण प्राप्त कर चुका है। इस राशि का उपयोग सभी समूहों के सदस्य आय अर्जन की विभिन्न गतिविधीयों में कर रहे हैं। रूखमा कहती हैं कि उन्होने स्वयं अभी तक समूह से 86000/– रूपये ऋण के रूप में ग्राम संगठन से तथा 90000/– रूपये बैंक ऋण लिया है जिससे वह सेनेट्री नैपकिन रिपेकिंग यूनिट व किराना जनरल स्टोर्स का संचालन कर रही हैं। इस गतिविधी के माध्यम से उन्हैं प्रतिमाह लगभग 15 से 18 हजार रूपये तक की आय हो जाती है।

रूखमा बाई बताती हैं कि समूह कि अन्य महिला सदस्य अलका बाई भी समूह से 72000/– रूपये का ऋण लेकर चूडी निर्माण कार्य एवं बकरी पालन की गतिविधी संचालित कर रही हैं जिससे उन्हैं प्रतिमाह की आय लगभग 10 से 12 हजार रूपये तक हो जाती है। समूह की एक अन्य सदस्य रोडीबाई द्वारा समूह से 87000/– रूपये का ऋण लेकर चाय नास्ता की दुकान एवं हेअर सैलून की दुकान प्रारंभ की इससे उन्हैं लगभग 11

हजार रूपये की प्रतिमाह आय होने लगी। इसी तरह समूह की अन्य सदस्य जस्सुबाई द्वारा भी समूह से 72000/– रूपये का ऋण लेकर दोना–पत्तल निर्माण कार्य एवं भोजनालय का संचालन किया जा रहा है, इस व्यवसाय से परिवार को प्रतिमाह लगभग 13000/– रूपये की आय हो जाती है। समूह की अन्य सदस्यों द्वारा भी इसी तरह की आय अर्जन की अन्य गतिविधियॉ जैसे– भैंस पालन, सिलाई कार्य, आदि भी किया जा रहा है एवं अपने परिवार के आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार किया जा रहा है। इतना ही नहीं समूह के सदस्यों द्वारा *शासकीय उचित मूल्य की दुकान (पीडीएस) का भी सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है।*

समूह की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनी :–

लक्ष्मी स्व–सहायता समूह के इन प्रयासों के कारण यह समूह अपने जिले एवं राज्य में अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। समूह के इन्हीं अच्छे प्रयासों की सराहना राष्ट्रीय स्तर पर भी हो चुकी है। समूह को भारत सरकार द्वारा दिसंबर 2016 में 100000/ (एक लाख रूपये) का पुरूस्कार भी दिया जा चुका है। आज लक्ष्मी स्व–सहायता समूह के सभी सदस्यों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती में सुधार हुआ है एवं महिलाएँ अब संगठित होकर अपने ग्राम एवं आस–पास के क्षेत्र की अन्य महिलाओं को भी जागरूक कर रही हैं। वे न केवल आर्थिक गतिविधी संचालित कर रही हैं वरन् ग्राम सभा एवं ग्राम पंचायत की बैठकों एवं सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार–प्रसार एवं उनका लाभ उनका लाभ वास्तविक हितग्राही को मिल सके इसका भी प्रयास कर रही हैं। अब समूह की महिलाएँ आत्मनिर्भर बन अपने आपको सशक्त महसूस करने लगी हैं।